ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 79-82
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

प्रवासी कवि जोगिंद्र सिंह कंवल की कविताओं में चेतना के स्वर

सुभाशनी शरीन लता
शोध अध्येत्री, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर (तेलांगना) भारत

Received- 08 .03. 2019, Revised- 19 .03. 2019, Accepted - 25.03.2019 E-mail: subashnilata1977@gmail.com

सारांश : *प्रवासी भारतीय रचनाकारों ने अपनी संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी साहित्य की सभी विधाओं को बनाया है, लेकिन प्रवासी कविता की अपनी अलग छाप है। इन कवितओं में कवि स्वदेश से दूर रहते हुए स्वदेश को देखने की दृष्टिकोण, विदेशी जीवन के संघर्ष, जीवन परिवर्तन, समकालीन परिस्थितियाँ आदि का चित्रण करता है। भारतेतर देशों की पहचान डॉ. कमल किशोर गोयका दो वर्गों में करते हैं–(1) भारतवंशियों का साहित्य और (2) प्रवासी भारतीयों का साहित्य। ''भारतवंशियों के साहित्य में मॉरिशस, फीजी, सूरीनाम, त्रिनिड़ाड आदि देशों का साहित्य आता है, जिनका जन्म इन देशों में हुआ और ये लेखक भारत भूमि और उसकी संस्कृति, धर्म, परंपराओं आदि से स्वंय को जोड़े हुए हैं और प्रवासी साहित्य में अमेरीका, इंग्लैंड, नीदरलैंड, आस्ट्रेलिया, डेनमार्क आदि देशों का साहित्य आता है, जो बेहतर जीवन एवं शिक्षा के लिए इन देशों में गए और अपने हिन्दी प्रेम के कारण उसे अपनी अभिव्यक्ति की भाषा बनाई।'' यह आलेख फीजी के हिंदी रचनाकार जोगिंद्र सिंह कंवल के काव्य संग्रहों में अभिव्यक्त फीजी के प्रवासी भारतीयों की समकालीन परिस्थितियों, संवेदनाओं और चेतना के स्वर पर आधारित है।*

कुंजी शब्द – संस्कृति, धर्म, परम्परा, दृष्कोण, लब्धप्रतिष्ठ, परिलक्षित, पंखुडिया, रूबाइया, काव्यमयी।

जोगिन्द्र सिंह कंवल (1927–2017) फीजी के सर्वाधिक लब्धप्रतिष्ठ लेखक माने जाते हैं। फीजी के हिंदी साहित्य जगत में जोगिन्द्र सिंह कंवल एक युगांतर उपस्थित कर देनेवाले रचनाकार के रूप में अवतरित हुए हैं। जोगिंद्र सिंह कंवल के लिए काव्य चहचहाते पक्षियों का आकाश में एक कतार में उड़ना, समुद्री लहरों का तट से ताल–मेल, झूरे के बाद बरसात की रिमझिम तथा मानव का संग्रम हैं। कंवल जी की कविताओं के संदर्भ में फीजी के भूतपूर्व भारतीय हाय कमिश्नर, प्रो. ईश्वरसिंह चौहान लिखते हैं– "एक ओर जहाँ योवन की उमंग, जीवन का सौंदर्य और मधुरतम मानवीय भावनाओं का अभूतपूर्ण चित्रण है, वहीं दूसरी ओर जीवन की भयावहता, अंधेरे और कसक का भी एहसास परिलक्षित होता है।" अतः कंवल जी की कविताएं फीजी के बदलते समाज की प्रसन्नताओं और वेदनाओं की साहित्यरूपी चित्रण है। उनकी अपनी कविताएँ अपने समय का आइना है। कंवल जी ने फीजी के समकालीन जन–जीवन पर कई संवेदनात्मक कविताएं लिखी हैं जो निम्नलिखित रचनाओं में संकलित हैः 'यादों की खुशबू' (1984), 'कुछ पत्ते कुछ पंखुडियाँ' (1996) और 'दर्द अपने–अपने' (2001).

'यादों की खुशबू' काव्य संग्रह कंवल जी की भारत और फीजी में अलग–अलग समय की सुखद एवं दुखत एहसासों की रचनात्मक कृति है। सन् 1984 में प्रकाशित इस काव्य संग्रह में कुछ छोटी कुछ लम्बी कविताओं द्वारा कवि ने अपने जीवन सफर की विभिन्न स्मृतियों और संवेदनाओं को काव्यमयी भाषा में प्रस्तुत किया है। कवि के लिए प्यार, जीवन, प्रकृति, सौन्दर्य, सुख, दुख, रिश्ते, मानवीय मूल्य आदि क्या माइने रखते हैं इसमें चित्रित किए गए हैं। इन कविताओं की भाषा सहज–सरल है, हिंदी–उर्दू मिश्रित शब्दावली तथा विषय में संवेदनशीलता अधिक है।

'कुछ पत्ते कुछ पंखुड़ियाँ'यह कंवल जी की हिंदी और उर्दू द्विभाषिक कविताओं का संग्रह है। 'कुछ पत्ते कुछ पंखुड़ियाँ' कवि के जीवन सफर से संबंधित आठ–आठ पंक्तियों की कविता एवं रुबाइयों का संकलन है, जिसका प्रकाशन 1996 में डायमंड पब्लिकेशंस द्वारा हुआ। रुबाई उर्दू की नज्म शायरी की विधा है जो चार पंक्तियों पर आधारित रहती है जिसमें एक विचार प्रकट किया गया हो, किंतु, कंवल जी ने चार पंक्तियों के बजाय आठ पंक्तियों की कविता रची है। ये सारी कविताएं कवि के जीवन सफर से संबंधित रखती हैं। इन रुबाइयों में कंवल जी ने प्रकृति को आधार बना कर प्रेम के संयोग और वियोग पक्ष पर अधिकत्तर रचनाएं संकलित की हैं।

'दर्द अपने–अपने' कंवल जी की नवीनत्म काव्य संग्रह है जिसका प्रकाशन डायमंड पब्लिकेशंस द्वारा सन् 2001 में हुआ। 'दर्द अपने–अपने' से कवि का तात्पर्य सिर्फ प्यार मुहब्बत और विरह–वियोग का दर्द नहीं है, पर सत्ता विद्रोह के बाद, भारतीय समाज के दर्द से भी है। इस किताब को तीन भागों में विभाजित किया गया है। पहली भाग का शीर्षक है 'दर्द अपने–अपने', जिसमें 18 कविताएं संकलित है। इस भाग की कविताएं उन सभी लोगों को समर्पित है जो 19 मई 2000 के कू की आँधी में

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

उजड़ने– उखड़ने के बाद आज भी दर्द की परछाईयों में जी रहें हैं। 'धरती का बेटा किसान' दूसरे भाग का शीर्षक है। इस भाग में भी 18 कविताएं संकलित हैं। ये इतिहास की चक्की में पिसते भारतीय किसानों को समर्पित हैं जो जमीनों और घरों से निकाले जाने के बावजूद आशा, साहस और धैर्य का दामन पकड़कर संघर्ष करते रहें हैं। तथा तीसरे भाग की कविताओं का शीर्षक 'प्यास' है जिसमें मुहब्बत और विरह–वियोग की 36 कविताएं संकलित की गई हैं।

भारतवंशियों की मर्मस्पर्शी अनुभवों से गठित होने वाली अनुभूतियों से संवलित 'दर्द अपने अपने' काव्य संग्रह देश की सीमाओं को तोड़कर संवेदनशील मानव से तादात्मय स्थापित करते हुए, समकालीनता का सबूत देती है। 'दर्द अपने अपने' काव्य संग्रह की भूमिका में कवि स्वयं कहता हैः–"जमीन के मालिक गरीब आसामियों को अपनी जमीनों से निकाल रहे हैं, उनके घर उजड़ रहे हो या देश के लोगों को आंधी और तूफान ने तोड़ दिया हो और कवि किसी पहाड़ की चोटी पर बैठकर अपने व्यक्तिगत प्यार की कविता–कहानियाँ लिखता रहे तो वह बड़ा स्वार्थी इंसान होगा।" कंवल की कविताएँ फीजी में बसे भारतवंशियों की वर्तमान जिंदगी से सरोकार रखने वाली कविता है जो समकालीनता की कसौटी पर खरी उतरती है।

फीजी और भारत के सांस्कृतिक संबंधों की नींव सन1879 में गिरमिटिया भारतीय श्रमिकों ने रखी थी जो गन्ने की खेती और चीनी की मिलों में काम करने के लिए अंग्रेजों द्वारा यहाँ लाए गए थे। कवि कंवल ने सन् 1879में गिरमिट प्रथा के अंतर्गत फीजी लाए गए इन भारतवंशियों की वर्तमान पीढ़ी के संघर्षों और उनकी महत्वाकांक्षाओं को अपनी रचना का केंद्र बनाया है। सन् 1987 में फीजी के भारतीयों के जीवन में एक तूफान आया जब फीजी में राजनीतिक विद्रोह हुआ और फीजी पर सैनिक शासन लागू किया गया। कू (coup)याने राजनीतिक विद्रोह के कारण देश में अशांति की आँधी उठी जिसके कारण भारतीयों और फीजी के आदिवासी समाज में मतभेद उत्पन्न होने लगा । इस अस्थिरता को थमने में बीस से अधिक वर्ष लग गए औरभारतीयों के मन में शंका, भय तथा असुरक्षा ने घर कर लिया। उनकी काव्य संग्रह अपने समय की परिस्थितियों और अनुभावों का सच्चा दस्तावेज है। इन सामाजिक असंगतियों को कवि 'हम भारतीयों को'कविता में चित्रित करते हैं।

"लम्बे सफर में हम भारतीयों को कभी पत्थर कभी मिले बबूल
कभी मिट जाती कभी जम जाती
इतिहास के दर्पण पे धूल
कभी रम्बूका कू कर बैठा
कभी स्पेट ने वार किया ...
उबड़–खाबड़ पगडण्डियों को
बड़े गौरव से पार किया।।"

विदेश में रहनेवाले भारतीय लेखक प्रवासी जीवन की विभिन्न पहलुओं को अपने साहित्य द्वारा उजागर कर रहे हैं। ये रचनाकार हिंदी साहित्य को नए विषय के साथ, नई शब्दावली और नई शैली के साथ ईमानदारी से पश्चिम जगत के यथार्थपरक परिवेश से भी जोड़ रहे हैं।

फीजी के प्रवासीभारतीयों के हृदयों में 140 वर्ष बाद भीस्वदेश को लेकर कई प्रश्न उठतेहैं। अपने कठिन परिश्रम से भारतीयों ने फीजी को एक रमणीक और विकासशील देश बनाया, किंतु, सन् 1987 औरसन् 2000 के राजनैतिक अस्थिरता ने भारतीयों के मन में क्षोभ, असंतोष और द्वंद्व को जन्म दिया है, जिसके कारण आज भी वे कई सवालों से घिरे हुए हैं। कवि अन्याय के खिलाफ 'कुछ सुलगते सवाल' में इन संवेदनाओं को अभिव्यक्त करता है–

" यह उदासी यह खमोशी
यहाँ क्यों इतना संनाटा है
चारों ओर कैसा है यह मातम
क्यों फैला है सब तरफ सोग
क्या भीतर बैठकर
नए जखमों को धोया जा रहा है
अन्याय की कोख से जन्में
एक नए अंधकार को सहा जा रहा है ।"

यहाँ कवि जिस घुटन, पीड़ा, संत्रास का अनुभव कर रहा है वह उसकी अपने अकेले की पीड़ा नहीं है। यह पूरे भारतीय समाज की पीड़ा है जो फीजीवासी महसूस कर रहे हैं। कवि अपने लोगों की भावनाएँ साहित्य के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाता है। वह अपने लोगें के लिए एक खुली खिड़की का काम करता हैं, जहाँ से वह एक दूरस्त स्थान के सामाजिक, भौगोलिक यथार्थ का सहजता से संप्रेषित करता है।

अपनी भूमि को छोड़कर गया व्यक्ति पीढ़ी–दर–पीढ़ी प्रवासी ही रहता है। प्रवासी मन में प्रवास की पीड़ा इस संशय के साथ भी रहती है कि नई दुनिया उसके लिए अधिक अच्छी है कि नहीं। एक ओर वह अपनी भाषा, संस्कृति व जीवन मूल्यों को पकड़े रहना चाहता है, क्योंकि परदेश में वहीं उसके अस्तितव की पहचान है। तो वहीं दूसरी ओर उसके मन में नए देश को अपनाने की दुविधा तथा विवशता बनी रहती है क्योंकि यही उसकी नई जमीन है। कवि जोगिन्द्र सिंह कंवल की भाँति अन्य कवियों ने भी इस

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

पराएपन को महसूस किया है और काव्य में इस संवेदना को अभिव्यक्त किया है। पंडित कमला प्रसाद मिश्र हिंदी जगत के एक जाज्वल्यमान सितारे हैं, जिन्होंने हिंदी के प्रति अपनी तपस्या से लोगों को सदैव प्रवाभित किया और इसलिए फीजी में उन्हें श्रद्धापूर्वक 'पंडित जी' कहकर ही संबोधित करते थे।हिंदी कविता के क्षेत्र में पंडित जी की अंतर्राष्ट्रीय पहचान रही है।वे जीवन भर साहित्य–साधना में तल्लीन रहे और कविता ही उनकी जीवन संगिनी थी। इसलिए आपको फीजी का राष्ट्रीय कवि कहा जाता है। फीजी के राष्ट्रकवि कमला प्रसाद मिश्र की कविता 'क्या मैं परदेशी हूँ ?' में फीजी के प्रवासी भारतीयों के अस्तित्व के सवाल को उठाया गया हैं–

धवल सिंधु–तट पर मैं बैठा अपना मानस बहलाता
फीजी में पैदा होकर फिर भी मैं परदेशी कहलाता
यह है गोरी नीती, मुझे सब भारतीय अब भी कहते
यद्यपि तनमन धन से मेरा फीजी से ही नाता है
भारत के जीवन से फीजी के जीवन में अंतर है
भारत कितनी दूर वहाँकौन सदा आता–जाता

'क्या मैं परदेशी हूँ?' यह प्रश्न फीजी के प्रवासी भारतीयों का है और हमेशा से ही प्रवासी भारतीयों के मस्तिष्क में देश और अस्तित्व को लेकर द्वंद्व उत्पन्न करता आ रहा है। यहाँ कवि विदेश में खुद को पराया महसूस कर रहा है। परदेश में जन्मे जाने के बावजूद वहाँ के लोगों ने उसे पराया ही माना जबकि कवि तन और मन से फीजी से जुड़ चुका है और अब यही उसका निवास है।

इसके अलावा कवि अपनी अस्मिता और अस्तित्व को लेकर सजग है। अपनी पहचान के संदर्भ में 'इतिहास का भार' कविता में कंवल प्रश्न करता हैं–

"हम प्रवासी, तुम बेगाने
हम सुनते यह बार–बार
गर यह देश भी अपना नहीं
तो अब जाँए किस सागर पार !"

लोकचेतना व्यक्ति के आस–पास के वातावरण को समझने तथा उस वातावरण में घटित कार्यों के मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है। यह मनुष्य को व्यक्तिगत तथा सामाजिक परिस्थितियों का ज्ञान कराती है। अतः लेखक जिस वातावरण में रहता है, उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। अगर वह लोक की समस्याओं से अलग रहकर, उन्हें नजरअंदाज करके अपनी निजी जिंदगी की उलझणों के बारे में लिखे तो वह स्वार्थी होगा। कंवल का भी यही मत है कि कोई भी लेखक अपने लोगों से अलग रहकर और उनके दुख दर्द से परे हटकर, उनकी तकलीफों और समस्याओं से मुँह मोड़कर अच्छे और प्रभावशाली साहित्य की रचना नहीं कर सकता।

भारतीयों के लिए जमीन उनकी माँ है जो उन्हें अपनी गोद में रहने का स्थान, खाने के लिए अहार और पीने के लिए स्वच्छ जल प्रदान करती है। भारतीय कठिन परिश्रम से जमीन पर खेती कर अन्न उगाते हैं, लेकिन जमीन की लीस समाप्त होने पर वहाँ के जमीन मालिक इन गरीब किसानों को जमीन से निकाल देते हैं तो वे निराशा के सागर में डूब जाते हैं। जमीन अपनी हो तो देश अपना लगता है और जब जमीन अपनी न हो तो व्यक्ति का उस देश से जुड़ाव नहीं हो पाता। इस त्रिशंकु की स्थिति,जहाँ प्रवासी भारतीय न स्वदेश के होकर रह पाते हैं और न ही विदेश की भूमि को अपना पाते हैं का मार्मिक चित्रण कवि 'उजड़ते–उखड़ते लोग' कविता में अभिव्यक्त करते हैं–

"इस बस्ती, इस गाँव में
ये खेत, यह सरसब्ज जमीन
जिसे वे
धरती माँ कहते थे
जिसकी फसलों की छाव में
कई पीढ़ियों से रहते थे
आज उसकी दिल चीरती जुदाई
कितनी दुखदाई हो रही है...
अपने बेटों से बिछड़कर
आज पराई हो रही है ।"

एक ओर कवि ने जमीन के लिए भावुकता दर्शायी है तो वहीं दूसरी ओर लोगों को अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने की प्रेरणा शक्ति भी प्रदान करते हैं। देश के स्वतंत्र होते ही भारतीय इस अधिकार के लिए प्रयत्नशील रहे और कवि अपनी रचानाओं में इन भारतीयों की आवाज को स्थान देता है। 'हमें जमीन दो' में कवि ने क्रांति का स्वर उठाया है–

"हमें अब जमीन दो
हम उसमें हल चलाएंगे
गर खिसक गया वक्त हाथ से
तो हम सब पछताएंगे
हमें अब जमीन दो
हम उसमें हल चलाएंगे।"

देश के किसान और उनकी फसलों को लम्बे झूरे ने बरबाद कर दिया हो, औरप्यासी धरती तो यह परिस्थिति कवि के लिए भी संवेदनशील होती है। कंवल जी की कविता 'धरती का बेटा किसान' किसानों की सिसकियों को वाणी देती है.'हे किसान! तू धरती का बेटा,फिर भी तेरा जीवन बेताल '! किसानों की स्थिति और अकाल से उत्पन्न समस्याओं को कवि ने 'धरती का बेटा किसान' कविता में

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

अंकित किया है।

"हे किसान! तू धरती का बेटा,
फिर भी तेरा जीवन बेताल
कभी तूफान तोड़ दे तुझको
कभी झूरा कर दे बेहाल
अन्नदाता तू जिस दुनिया का
वही उतारे तेरी खाल
फिर भी हँसता मुस्कुराता
बहाए पसीना तू हर साल।"

इस प्रकार कवि की रचना प्रक्रिया का वास्तविक आधार तथा उसके विषय विस्तार की समस्त संभावनाओं का केंद्र फीजी का लोक जीवन ही है। कंवल का यह कहना है कि उनकी रचनाएँ सत्य पर आधारित है तथा लोक कल्याण की मंगल भावना से परिपूर्ण है। इसलिए वे अपनी रचनाओं द्वारा फीजी के प्रवासी भारतीयों की ह्रदय की गहराइयों में उतरकर वहाँ की दशा का सजीव और मार्मिक चित्रण दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से लोक में जनजागृति लाने का भरसक प्रयास करता है। उनकीकविताएँ 'हमें जमीन दो', 'उठो नवजवानों', 'आवाज', तथा 'दीप एक जलता रहा' लोक में व्यापत आतंक से आम जनता को मुक्ति दिलाने का मार्ग प्रशस्त करता है। यह अंधकार में आस्था भरे स्वर तथा जनजागृति के काव्य हैं।

अंधेरे बन्द कमरों में भी कवि आस्था का मार्ग प्रशस्त करता है। समाज की पुनर्स्थापना के लिए कवि 'उठो नवजवानों कविता' में उम्मीद और उत्साह के भावों को इस प्रकार अभिव्यक्त करता है–

"यह मेरी देश, वह तेरा देश
बंधन, अड़चनें और दूरियाँ
फिर भी तुम लेते चलो
प्यार की डोर में बाँधकर
मित्रता की राहों पर
जीवन के ये काफिले ।"

लोक और समाज का अन्योन्यश्रित संबंध है। समाज में लोक जीवन का सर्वाधिक महत्व है। आदमी से अलग होकर न तो व्यक्ति का सामाजिक अस्तिव रहेगा और न ही कविता अपने स्थायी महत्व को स्थापित कर सकेगी। "इसीलिए महान कवि का कर्त्तव्य है कि वह साधारण जनता की दैनिक समस्याओं तथा उसके विरुद्ध निर्मित सामाजिक विषमताओं को वाणी दे।" अतः कवि अपनी रचना को जन सुलभ बनाकर जन–जीवन की चेतना को परिष्त करता हुआ, लोक में सामाजिक, राजनीतिक, एवं सांस्तिक स्तर पर व्याप्त जनविरोधी वृतियों से मुक्ति का पथ प्रशस्त करता है। कंवल की कविताओं में लोकचेतना के स्वर विद्यमान हैं जो फीजी के प्रवासी भारतीयों की घुटन, अस्मिता का द्वंद्व, जमीन की समस्या, किसानों की पीड़ा तथा जन–जागृति को दर्शाती हैं।

प्रस्तुत रचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जोगिंद्र सिंह कंवल के काव्यों में इन्द्रधनुष के खुबसूरत रंगों के अलावा पीड़ा, वेदना, काँटे, और जीवन के खट्टे–मीठे क्षणों को स्थान मिला है। उनकी रचनाओं में फीजी के अनेक परिवारों के दर्द, बिखराव, ठहराव और हताशा की अभिव्यक्ति हुई है। अतः उपर्युक्त काव्य संदर्भों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कंवल की कविताएँ लोकचेतना और जनजागृति को समर्पित हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. कमल किशोर गोयका.(2015). प्रवासी साहित्यः जोहान्बर्ग से आगे.पृष्ठ 8
2. कंवल, जोगिन्द्र सिंह. (2001). दर्द अपने अपने. डायमंड पब्लिकेशन्स.पृष्ठ सं.14
3. डॉ. बाबू जोसफ. (2010). समकालीन हिंदी कविता और कुमार अंबुज. अमन प्रकाशन. पृष्ठ 35
4. डॉ. प्रतिभा मुदलियार. (2017). स्त्री विमर्श और समकालीन साहित्यिक संदर्भ. अमन प्रकाशन. पृष्ठ 34
5. डॉ. सुमन सिंह.(2012). समकालीन हिंदी कविता में दलित चेतना. विकास प्रकाशन. पृष्ठ 48 .
6. कंवल, जोगिन्द्र सिंह. (2001). दर्द अपने अपने. डायमंड पब्लिकेशन्स. पृष्ठ सं.21.
7. कंवल, जोगिन्द्र सिंह. (2001). दर्द अपने अपने. डायमंड पब्लिकेशन्स. पृष्ठ सं.36
8. कमला प्रसाद मिश्र. (2004). फीजी का हिंदी काव्य साहित्य– सं. जोगिन्द्र सिंह कंवल. भारतीय सांस्तिक संबंध परिषद पृष्ठ.16
9. कंवल, जोगिन्द्र सिंह. (2001). दर्द अपने अपने. डायमंड पब्लिकेशन्स. पृष्ठ सं.18
10. वहीं,पृष्ठ सं.53.
11. वर्मा, विमलेश कांति. (2016). प्रवासी संसार (जुलाई–सितम्बर). फीजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य. पृष्ठ सं.15
12. कंवल, जोगिन्द्र सिंह. (2001). दर्द अपने अपने. डायमंड पब्लिकेशन्स. पृष्ठ सं.79
13. वहीं, पृष्ठ सं.7

*****